सामाजिक न्याय के संदर्भ में आचार्य विनोबा भावे के विचार

डॉ. रवीन्द्र कुमार सोहोनी

आज जब संपूर्ण मानव प्रजाति इक्कीसवीं शताब्दी की दहलीज पर खड़ी है, इस मानव प्रजाति के समक्ष आज जो सबसे बड़ा यक्ष प्रश्न है कि क्या समाज बुद्धि, अंतर्दृष्टि विवेक और अहिंसा पर आधारित उलटीकृत जीवन की ओर लौट सकेगा?

आचार्य विनोबा भावे ने एक युग द्रष्टा की भांति इस यक्ष प्रश्न को अपने जीवन काल में ही भांप लिया था, महात्मा गांधी के मानस पुत्र आध्यात्मिक और रचनात्मक उत्तराधिकारी के रूप में विनोबा अनवरत जीवन पर्यंत चिंतन और अहिंसक क्रांति में संलग्न रहे। स्वतंत्रता पश्चात् भारत में आचार्य विनोबा भावे ने एक प्रबुद्ध नागरिक और गांधीवादी चिंतक के रूप में राजनीति को पवित्र करने, मनुष्य के पुरुषार्थ को स्थापित करने, मानव मात्र की आत्मा में प्रेम, श्रद्धा, त्याग और परस्पर विश्वास को पुनर्संचरित प्रवाहित करने तथा सामाजिक न्याय को स्थापित करने की दिशा में अविस्मरणीय कार्य किया। विनोबा ने मानव की अस्मिता, गरिमा और प्रतिष्ठा की पुनर्स्थापना के लिए समाज विज्ञान के क्षेत्र में मौलिक सिद्धांतों का प्रतिपादन कर समाज, राष्ट्र और समूचे विश्व को एक नई दिशा प्रदान की।

सम्यकद्रष्टा आचार्य प्रवर विनोबा भावे ने सामाजिक एवं आर्थिक न्याय की स्थापना हेतु 'भूदान आंदोलन' का सूत्रपात किया। इस हेतु आचार्य भावे ने लगभग संपूर्ण राष्ट्र की पदयात्रा कर जीवनभर भूमि का दान मांगा तथा सामाजिक न्याय के महान उद्देश्य के लिए अपने आपको समर्पित कर दिया।

आचार्य भावे ने पहले भूदान और उसके पश्चात ग्रामदान, अखंड

दान से प्रारंभ कर श्रमदान, संपत्ति दान आदि का संदेश गांव-गांव और प्रत्येक घर में पहुंचाकर देश में और कार्यकर्ताओं में एक नई चेतना का संचार किया।

18 अप्रैल, 1951 को जो भूदान गंगा प्रवाहित हुई उस पर टिप्पणी करते हुए विनोबा जी ने कहा था— "कम्युनिस्टों के काम के पीछे जो विचार है उसका सारभूत अंश हमें ग्रहण करना होगा, उस पर अमल करना होगा। यह अमल कैसे किया जाए, इस बारे में मैं सोचता था तो मुझे सूझ गया। ब्राह्मण मैं था ही, वामनअवतार मैंने ले लिया और भूमिदान मांगना शुरू कर दिया।"

आर्थिक और सामाजिक न्याय की स्थापना के लिए भूदान का जो क्रांतिकारी कार्यक्रम विनोबा ने अपने हाथों में लिया था उसके विषय में भालचंद्र भंडारी की मान्यता है कि— "जिस प्रकार 'यज्ञ' में क्षतिपूर्ति, शुद्धिकरण और संगठन ये तीन उद्देश्य पूरे होते हैं, उसी प्रकार 'भूदान यज्ञ' में भी इन तीनों उद्देश्यों की पूर्ति होती है।"

कम्युनिस्टों के वर्ग संघर्ष तथा लोकतंत्रात्मक राष्ट्रों के संवैधानिक मार्ग के स्थान पर आचार्य विनोबा भावे ने प्रेम व अहिंसा के माध्यम से सामाजिक न्याय स्थापित करने का बीड़ा उठाया और समूची दुनिया के सामने एक सुंदर मिसाल प्रस्तुत की। भूदान आंदोलन पर टिप्पणी करते हुए विमला बहन लिखती हैं— "स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भूदान यज्ञ आंदोलन इस देश में गरीबी और अमीरी के निराकरण के लिए अहिंसा और सत्याग्रह की नीति पर अधिष्ठित एक सुंदर एवं जनकल्याणकारी विचार है। आज हमारे देश के सामने जो मूलभूत समस्याएं खड़ी हैं, सुलझाने के लिए भारत की इस धरती में से निकला हुआ एक माकूल जवाब है।"

आचार्य विनोबा भावे की सुदृढ़ मान्यता थी कि ईश्वर ने जब सभी मनुष्यों के लिए अपनी प्रभूत संपदा से समान रूप में उपलब्ध करवाये हैं तो किसी भी व्यक्ति को भूमिहीन रखना प्रकृति के नियमों का न केवल उल्लंघन है अपितु अन्याय भी है। इस अन्याय की समाप्ति का एक ही सुंदर हल है कि भूमि का असमान वितरण समाप्त किया जाए। अहिंसक और शांतिपूर्ण मार्ग से भूमि का समान वितरण कर सर्वोदय समाज की रचना की जाए। इस प्रकार भूदान आंदोलन सामाजिक न्याय की स्थापना का एक रचनात्मक हथियार बन जाता है।

आचार्य विनोबा अपनी सामाजिक न्याय की अवधारणा को मजबूती प्रदान करने हेतु 'ग्रामदान' तथा 'ग्रामराज्य' की अभिनव मान्यताओं का प्रतिपादन करते हुए कहते हैं कि "मनुष्य जाति को अधिनायकवाद की बुराईयों से बचाने के लिए किसी ऐसी पद्धति की जरूरत है, जिसमें उसे पहले कुछ खाना और कुछ स्वतंत्रता भी हो। साथ ही उसके अंदर ऐसी गुंजाइश भी हो कि धीरे-धीरे हर आदमी को बहुत सा खाना और बहुत सी आजादी भी मिल जाए। ग्रामराज उसी दिशा में एक प्रयत्न है।"

ग्रामदान आंदोलन के विचार को सामाजिक न्याय की दिशा में मील का पत्थर निरूपित किया जा सकता है। ग्रामदान आंदोलन के विचार ने आर्थिक, सामाजिक तथा राजनीतिक क्षेत्र में अभिनव मूल्यों की स्थापना कर विश्व में बढ़ती हिंसा तथा तनाव को तिरोहित करने की दिशा में महत्वपूर्ण विकल्प प्रस्तुत किया है। भूदान और ग्रामदान के ऐतिहासिक उन्नयन के पश्चात् संपत्ति दान का 'मूल्य' सामाजिक न्याय की दिशा में एक स्वर्णिम मूल्य है। एक स्वतंत्र विचारक तथा चिंतक के रूप में विनोबा के पास आध्यात्मिक ज्ञान का एक विशाल भंडार है। अपनी आध्यात्मिकता तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण के कारण विनोबा समाज विज्ञान के क्षेत्र में नई-नई अवधारणाएं रचने वाले आधुनिक ऋषि हैं।

विनोबा के संपत्ति दान के विषय में उनके हमसफ़र चिंतक तथा सर्वोदय तत्ववेत्ता दादा धर्माधिकारी लिखते हैं— "संपत्ति दान है—संग्रह के निराकरण के लिए, जीविका के शुद्धिकरण के लिए और अनुत्पादक व्यवसायों के निराकरण के लिए।"

विनोबा का संपत्तिदान का आग्रह बड़ा व्यापक है, विनोबा इसमें गरीब और अमीर का कोई भेद नहीं करते। विनोबा जी की यह मान्यता है कि प्रत्येक व्यक्ति को संपत्ति को भोगने के पूर्व दान करना चाहिए। विनोबा के संपत्ति दान यज्ञ के पीछे एक गहन दर्शन तथा उतना ही गहरा अध्यात्म है। दर्शन और अध्यात्म के संगम से उत्पन्न होने के कारण ही इस विचार में इतनी प्रखरता है।

आचार्य विनोबा भावे अपने चिंतन और कर्म से समाज रूपी मंदिर में 'श्रमदेवता' की प्रतिष्ठा स्थापित करने के पक्षधर थे। 'श्रमेव जयते' के सिद्धांत में विश्वास होने के कारण उनकी मान्यता थी कि श्रमदान सर्वश्रेष्ठ दान है, और उसकी तुलना किसी से नहीं की जानी चाहिए। भावे इस विषय पर प्रकाश डालते हुए लिखते हैं— "जिस तरह किसी असाधारण पुरुष द्वारा किया विचार और भावना का दान

असाधारण होने के कारण सर्वश्रेष्ठ माना जाता है, उसी तरह साधारण पुरुष द्वारा किया जाने वाला श्रमदान भी सार्वत्रिक और मूलभूत दान सर्वश्रेष्ठ दान माना जाएगा।"[5]

आज सम्पूर्ण मानवता के समक्ष बुनियादी प्रश्न सामाजिक न्याय का है। समाज का एक बड़ा भाग दलित, शोषित व पीड़ित अवस्था में है, ऐसे समाज में नवजीवन का संचार करना आज की प्राथमिक और महती आवश्यकता है। श्रम की प्रतिष्ठा से अधिष्ठान के लिए आवश्यक है श्रमाधारित समाज की स्थापना की जाए। समाज की सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक परिकल्पना के मूल में जब श्रम नहीं होगा, तब तक एक सुंदर, स्वस्थ और आकर्षणवान समाज की स्थापना न हो सकेगी।

आचार्य विनोबा भावे का अपना एक मौलिक समाज दर्शन था तथा उसके पीछे एक सुव्यवस्थित तथा सुविचारित योजना भी थी। विनोबा की सामाजिक न्याय की अवधारणा उनके अन्य विचारों की भाँति उदार एवं उदात्त है। किसी भी समाज में सामाजिक संरचना का स्वरूप कैसा है, यह एक अपरिमित मूल्य का विषय है। सामाजिक संरचना का स्वरूप जहाँ अपने मूल्यों को उद्भावित करने का सामर्थ्य रखता है वहीं दूसरी तरफ नए मूल्यों का आवाहन का आमंत्रण देने का भी प्रयास करता है। विनोबा जी सर्वोदय समाज की स्थापना में आर्थिक विषमता के साथ ही सामाजिक विषमता को भी बाधा मानते थे और यही कारण है कि विनोबा जी सामाजिक विषमता को भी समाप्त करने के प्रबल पक्षधर है। विनोबा का सामाजिक समानता का विचार वैचारिक धरातल पर ही नहीं अपितु कर्म के धरातल पर भी पल्लवित हुआ है। विनोबा जी के चिंतन की सबसे बड़ी विशेषता है विचार और कर्म में अद्भुत साम्य।

गांधी जी के सेवाग्राम आश्रम में विनोबा जी ने पाखाना सफाई का काम अपने हाथों में लिया जिसका आश्रम में पर्याप्त विरोध हुआ किंतु गांधी जी ने विनोबा का समर्थन करते हुए कहा था—'मेहतर का काम, पाखाना सफाई का काम तो बहुत पवित्र है। आश्रम में तो यह होता ही रहेगा। जिसे न रुचे वो आश्रम छोड़कर जा सकता है।'[6]

आचार्य विनोबा भावे का सामाजिक न्याय का दर्शन जितना उदार, उदात्त तथा अद्भुत है उतना ही उनका यह दर्शन विशाल होकर क्षितिज के दूसरे छोर तक फैला हुआ है। विनोबा जी की सामाजिक न्याय की अवधारणा केवल वर्ग भेद तथा वर्ण भेद तक ही सीमित नहीं है। विनोबा जी अपने सामाजिक न्याय के दर्शन में इन सीमाओं से आगे बढ़कर लिंग भेद को लेकर जो असमानता है उस पर भी कुठाराघात करते हैं। विनोबा जी स्त्री स्वतंत्रता तथा स्त्री समानता के साथ स्त्रियों की सहनागरिकता की भी पुरजोर वकालत करते हैं।

आचार्य विनोबा भावे का लक्ष्य एक नई समाज रचना का निर्माण करना था, उनकी आरंभ से ही मान्यता रही कि असमानता एक समाज विरोधी वृत्ति है। मनुष्यों में असमानता के स्थान पर समानता ही अधिक है। मनुष्यों के बीच ईश्वर ने ऐसा कोई भेद नहीं रखा है जैसा कि पशु जगत में देखने को मिलता है। विनोबा असमानता, कलह, हिंसा तथा भेदभाव के स्थान पर सहानुभूति, त्याग, प्रेम तथा समन्वय की स्थापना करना चाहते थे।

आचार्य विनोबा भावे का सामाजिक आर्थिक चिंतन आधा अधूरा चिंतन नहीं है, वह एक संपूर्ण चिंतन है, विनोबा जी की मान्यता थी कि संसार की समस्त गतिविधियों का केंद्र मनुष्य के शरीर के अतिरिक्त, उनके मन, मस्तिष्क तथा आत्मा का विशेष महत्व है। इसलिए एक आदर्श चिंतन वही है जो भौतिक उन्नति के साथ आध्यात्मिक उन्नति को उसके चरम लक्ष्य तक पहुँचाए। मानव समाज का संपूर्ण नैतिक, भौतिक तथा अंततः आध्यात्मिक विकास उनके दर्शन का आधारभूत सिद्धांत था। विनोबा का सामाजिक न्याय का चिंतन तथा दर्शन एक समग्रतावादी दर्शन है।

विनोबा के समाज दर्शन की रेखांकित की जाने वाली बात यह है कि उन्होंने अपने दर्शन को स्वयं जिया। भारतीय ऋषि परंपरा के चिंतक विनोबा विशुद्ध भारतीय चिंतक थे।

संदर्भ

1. भावे, विनोबा, [illegible] क्या और क्यों? [illegible] (काशी: अखिल भारत सर्व सेवा संघ प्रकाशन, दिसंबर 1960), पृष्ठ 20
2. वही, पृष्ठ 121
3. भावे, विनोबा, [illegible] (काशी: अखिल भारत सर्व सेवा संघ प्रकाशन, 1959) पृष्ठ 5
4. [illegible] (काशी: अखिल भारत सर्व सेवा संघ प्रकाशन, अप्रैल 1959), पृष्ठ 37-38
5. धर्माधिकारी, दादा, सर्वोदय दर्शन, [illegible] संस्करण, (वाराणसी: सर्व सेवा संघ प्रकाशन, [illegible] 1983), पृष्ठ 209
6. भावे, विनोबा, [illegible] (काशी: अखिल भारत सर्व सेवा संघ प्रकाशन, मई 1959), पृष्ठ 33
7. भट्ट, [illegible] (वाराणसी: सर्व सेवा संघ प्रकाशन, 1991), पृष्ठ 31